ऐसी थीं मम्मा

वे ऐसी शक्तिशाली माँ थीं जिसने सबकी सभी बातें समा ली थीं। वे सभी को प्यार से समझाती थीं, उन्हें उनकी कमजोरियां महसूस कराती थीं व उन्हें निकालने में उन्हें सहयोग देती थीं। कभी किसी को भी मम्मा ने ये नहीं कहा कि तुम तो हो ही ऐसी, तुम कभी नहीं सुधरोगी।

जिनका बाप स्वयं भगवान हो और मम्मा ज्ञान की देवी सरस्वती हो व स्वयं भाग्य विधाता हो, भला उनके भाग्य के क्या कहने। ज्ञान के सागर निराकार परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा सन् 1937 में रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ रचा। उस महान यज्ञ में अनेक आत्माओं ने अपने जीवन को अर्पण किया। उन्हीं में से एक कन्या थी राधा, जो अति सुशील, अति सौम्य और अति बुद्धिमती थी। वही आगे चलकर इस महान यज्ञ को सम्भालने वाली जगदम्बा सरस्वती बनी।

ये ऐसी महानात्मा थी जिसे स्वयं भगवान ने प्रजापिता ब्रह्मा के बाद प्रथम नम्बर दिया। अर्थात सम्पूर्ण सृष्टि की दूसरे नम्बर की अति महान आत्मा थी। उनकी वाणी अति तेजस्वी थी। किसी भी विषय पर वे घण्टों धारा प्रवाह बोल सकती थीं। आज भी हम सब जब उनकी वाणी सुनते हैं तो पता चलता है कि उस समय भी जब ज्ञान इतना गुह्य प्राप्त नहीं हुआ था, तब भी उनका ज्ञान-चिन्तन कितना गहन था। जो बातें आज भी हमारी समझ से परे हैं वे अब से 55 वर्ष पूर्व भी उनकी बुद्धि में स्पष्ट थीं। तब ही तो भक्त उनकी पूजा विद्या की देवी सरस्वती के रूप में करते हैं।

महान तपस्विनी -

वे धरती पर रहते भी यहाँ नहीं रहती थीं। इस धरा के सभी आकर्षण उनके लिए गौण थे। जब प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा शिव की दृष्टि उन पर पड़ी तो दोनों ने एक दूसरे को पहचान लिया और छोटी राधा स्मृति-स्वरूप हो गई। मैं वही हूँ जो आदि में श्री लक्ष्मी थी। पांच हजार वर्ष पूर्व की स्मृति आ गई और वे सदा के लिए मग्न हो गईं पुन: अपने उसी आदि स्वरूप को पाने के लिए। घोर तपस्या की जरूरत थी। उस सभी यज्ञवत्स रात्रि नौ बजे सो जाते थे। मम्मा अमृतवेला दो बजे उठकर योग में मग्न हो जाती थीं। उनके स्थिर नयन, चेहरे पर झलकती रूहानियत और वाणी में अल्पता स्पष्ट आभास कराती थी कि वे निरंतर योगयुक्त हैं।

वे तीस वर्ष तक ब्रह्मा वत्सों के मध्य रही। सभी ने उनको योगयुक्त व ज्ञान-चिन्तन में मग्न देखा। उनकी दृष्टि पड़ते ही सभी आत्म-स्वरूप में स्थित हो जाते थे।

वे गुणमूर्ति थीं, पालनकर्ता थीं

तीस वर्ष की लम्बी अवधि तक वे यज्ञमाता रही। उनके मुख की मुस्कान देखकर सभी अपने दुख भूल जाते थे। जरा सोचें -दो चार बच्चों को भी सम्भालना कितना कठिन होता है। उनके साथ थे 380 ब्रह्मावत्स, जिनमें अधिकांश तो बच्चे ही थे। उन्हें संतुष्ट करने वाली, उनकी पालना करने वाली स्वयं कितनी महान रही होगी। चौदह वर्ष तक उन्होने उन्हें छोटे से बड़ा किया। विभिन्न संस्कारों वाली आत्माओं को एक जुट रखा। इतने लम्बे काल में एक भी ऐसी आत्मा नहीं थी जिसने मम्मा के बारे में कुछ गलत कहा हो। सभी उनका गुणगान करते हुए यही कहते थे -वे गुणमूर्ति थीं। वे ऐसी शक्तिशाली माँ थीं जिसने सबकी सभी बातें समा ली थीं। वे सभी को प्यार से समझाती थीं, उन्हें उनकी कमजोरियां महसूस कराती थीं व उन्हें निकालने में उन्हें सहयोग देती थीं। कभी किसी को भी मम्मा ने ये नहीं कहा कि तुम तो हो ही ऐसी, तुम कभी नहीं सुधरोगी।

वे पवित्रता की साक्षात् मूर्ति थीं

संसार में अनेक नर-नारी दैहिक सुंदरता से सम्पन्न हैं, परन्तु मम्मा का आत्मिक सौंदर्य सबकी दूषित वृत्तियों को नष्ट करने वाला था। जिन पर भी उनकी दृष्टि पड़ती वह देहभान से मुक्त हुआ सा पवित्र वायब्रेशन्स प्राप्त करने लगता था। उनके चेहरे का तेज, मस्तक की दिव्यता और नयनों का नूरानीपन सभी को सांसारिक वासनाओं से ऊपर उठाकर एक अलौकिक आभा का अनुभव कराने लगता था। सभी उन्हें देखकर अन्तर्मन की गहराई से कह उठते थे..मेरी मां..उनका पवित्र स्पर्श पाकर चित्त निर्मल हो जाता था, वृत्तियां शुद्ध हो जाती थीं। ऐसा नहीं है कि उनके पास राक्षसी वृत्ति वाले लोग नहीं आते थे, आते थे, परन्तु देव-वृत्ति लेकर वापिस जाते थे। उनकी पवित्रता संसार के लिए सहारा थी व प्रकृति के लिए अमृतधारा थी। सचमुच संसार उन्हें पाकर धन्य हो गया। धन्य हैं वे लोग जिन्होने ऐसी माँ की गोद पाई।

वे शक्ति-अवतार थीं

उनकी दृष्टि पड़ते ही अनेक भाई-बहनें ध्यान स्थित हो जाते थे। बाबा भी उन्हें कहते थे -मम्मा इन्हें सूक्ष्म वतन की सैर कराओ। मम्मा उन्हें अपने सामने बैठाती थी और योग-दृष्टि देती थी और वे ध्यान में जाकर भिन्न-भिन्न दृश्य देखते थे। परन्तु मम्मा को कभी ये भान नहीं होता था कि मैने इन्हें ध्यान में भेजा। वे स्वयं को निमित्त ही समझती थी और सदा यही कहती थी कि ये सब आलमाइटी बाबा की जादूगरी है।

ऐसे नहीं तीस वर्ष में उनके सामने विपरीत बातें नहीं आईं। कोई भी महान व्यक्ति अनेक बाधाओं को पार करके ही महानता के शिखर पर पहुँचता है। परन्तु विपरीत परिस्थितियों मे भी उनके चेहरे की मुस्कान कम नहीं हुई। बेगरी पार्ट के लम्बेकाल से उन्हें भी गुजरना पड़ा परन्तु उन्होने सबको धैर्य दिया व सहारा दिया। ज्ञान बांटने हेतु व ब्रह्मावत्सों की पालना करने हेतु वे भी सेवाकेन्द्रों पर जाती थीं, वहां विरोधी तत्वों से उनका भी सामना होता था, परन्तु वे कभी विचलित नहीं हुई।

माया के किसी भी विकार का अंश कहीं भी उनमें दिखाई नहीं देता था, उन्हें किसी ने कभी क्रोध करते नहीं देखा। उन्हें किसी के मोह में अटकते कभी नहीं देखा। वे सर्वस्व त्यागी व सम्पूर्ण निरहंकारी थीं। यही उनके शक्तिस्वरूप होने का प्रत्यक्ष प्रमाण था।

दुर्गा, अम्बा व काली स्वरूपा

कई दूषित वृत्ति वाले लोग जब उनके सामने आते थे तो उनके काली स्वरूप को देखकर भयभीत हो जाते थे। वे माया के सामने अष्ट भुजाधारी दुर्गा देवी थी और सभी को मातृत्व प्रदान करने वाली जगदम्बा थी। सर्वशक्तिवान से सर्व शक्तियों का वरदान उन्हें प्राप्त था। वे न केवल स्वयं वरदानी थी परन्तु वरदाता भी थीं। उन्होने जिसे जो बोला, वह वरदान बन गया। ऐसे अनेक अनुभव कई ब्रह्मा वत्सों के पास थे। हम सबकी प्यारी सरस्वती माँ ऐसी महान थी जिसने अनेकों को योगी और योग्य बनाया। जो उनके सानिध्य में आये, आज उनमें से बहुत कम लोग जीवित है, वे सब मम्मा के गुणों का बखान करते थकते नहीं। सभी की एक ही आवाज रहती है, ऐसी महान आत्मा हमने अन्य कोई नहीं देखी। तो जैसी मां वैसे वत्स, हम सबमें भी उनके गुण रूपी बीज विद्यमान हैं। हम उन जैसा गुणवान बनें, उन जैसा गम्भीर व धैर्यवान बने। हम उनकी तरह योगी व पवित्रता की देवी व देव बनें तब ही हम उनके सच्चे वत्स कहलायेंगे। 24 जून उनका स्मृति दिवस है। इस दिवस पर हम उन्हें भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करते हैं व उन जैसा महान बनने का संकल्प लेते हैं। - ब्र.कु.सूर्य

सोनगढ़ (वलसाड)। रामायण कथाकार जगदीश बापू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सुभद्रा।

माँ - जगदम्बा सरस्वती ...

वापस जाने का दिल नहीं होता था। मतेश्वरी जी का यज्ञ से बहुत स्नेह था। वे कहा करती थीं कि यज्ञ की कोई भी वस्तु बेकार नहीं जानी चाहिए। एक बार की बात है कि यज्ञ-वत्स गेहूँ साफ करके बोरे में भर चुके थें। कुछ गेहूँ इधर-उधर बिखरे हुए भी थे। मातेश्वरी जी ने ध्यान दिलाते हुए बड़े ही स्नेह से कहा कि एक-एक गेहूँ का दाना एक-एक मोहर के बराबर है। वे यज्ञ की एक-एक वस्तु की कीमत जानती थीं एवं बतलाती भी थीं। गम्भीरता, मधुरता, हर्षितमुखता जैसे गुणों से सभी को उनसे माँ की भासना आती थी। बच्चे से लेकर बुजुर्गों तक सभी उन्हें मम्मा कहा करते थे। वे कुशल प्रबन्धक थीं। यज्ञ-वत्सों की स्थूल के साथ सूक्ष्म आध्यात्मिक पालना पर उनका पर उनका विशेष ध्यान रहता था। वे कहा करतीं थी कि सच्चा पुरूषार्थी वही है जो पुरूष अर्थात् आत्मा के सही अर्थ में टिके अथवा आत्मिक स्थिति में स्थित होकर कर्म करें। मातेश्वरी जी प्रतिदिन यज्ञ-वत्सों की दिनचर्या की जाँच करती थीं। सभी से क्लास में पूछती थीं कि क्या अपने कर्मों पर ध्यान दिया? किसी ने किसी को दु:ख तो नहीं दिया? किसी से कोई भूल तो नहीं हुई?

आध्यात्मिक शक्तियों का तीव्र विकास

प्यारी मम्मा ने प्रारम्भ से ही अपने पुरूषार्थ को तीव्र बनाए रखा। उनके तीव्र पुरूषार्थ के दो मुख्य कारण रहे -१.एक बार की हुई भूल को फिर से दोहराना नहीं और २. शिव बाबा की दी हुई शिक्षाओं को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाए रखना। कितना भी शारीरिक कष्ट क्यों न हो, ईश्वरीय शिक्षाओं को मम्मा ने जीवन से कभी अलग नहीं किया। एक बार किसी ने उनसे पूछा था कि आप बाद में आकार भी पहले वालों से कैसे आगे निकल गई, तो उन्होंने जवाब दिया-शिव बाबा जो भी आज्ञा करते हैं मैं उसी समय उसको आचरण में लाती हूं। मम्मा ने परिवार में सभी भाई-बहनों का दिल जीत लिया था। आने वाले हर जिज्ञासु को वे इतने ईश्वरीय स्नेह व शक्ति से ज्ञान सुनाती थीं कि वह बाबा का बच्चा बन ही जाता था।

असम्भव को सम्भव बनाया

यदि बाबा ने उनको कोई ऐसा कार्य सौंप दिया जिसका उन्हें अनुभव न हो या बहुत कठिन हो तब भी उन्होंने कभी ऐसा नहीं कहा कि मैं इसे कैसे करूंगी, मैं तो इससे अपरिचित हूँ। उन्होंने सदा जी बाबा, कह कर ज़िम्मेवारी को स्वीकार किया और उसे सम्पन्न करके दिखाया। मिसाल के तौर पर, एक अवसर पर मम्मा ने बाबा के आगे वायदा किया था कि अब से स्नेह में या दु:ख में इन आँखों से आँसू नहीं बहेंगे, तो उन्होंने यह वायदा अटल निभाया।

किसी की कमी पर नज़र नहीं

मम्मा हमेशा कहा करती थीं कि पुरूषार्थ में कभी भी ढीलापन नहीं आए, इसके लिए किसी की कमी देखने के बजाए आप अपनी कमी को देखो। दूसरों की बुराई देखना अर्थात् स्वयं में गन्दगी भरना। वे कहा करती थीं कि मुख्य विकार है देहाभिमान। परमात्मा बाप की आज्ञा है कि देही अभिमानी की मर्यादा से बाहर नहीं निकलना। जिस तरह साँप के दाँत बाहर निकालने के बाद भी साँप तो चलता ही है, ठीक इसी प्रकार, विकारी कर्मों के दाँत निकाल दो तो भी जीवन तो चलेगा पर उस जीवन से पाप कर्म नहीं बनेंगे। ईश्वर जीवन के आदि काल से ही उनका यह स्लोगन रहा कि हुक्मी हुक्म चलाए रहा। अनेक व्यर्थ संकल्पों से भरी मानसिक स्थिति लेकर जो भी मम्मा के पास आते थे और अपनी समस्याएँ सुनाते थे तब मम्मा बहुत ही धैर्य,शान्ति,सरलता और गम्भीर मुद्रा से सुनती और शिक्षा देती थीं। वे कहती थीं कि जब आप हो ही सर्वशक्तिवान परमात्मा की सन्तान तो इस संसार की आपत्ति आप आत्मा को स्पर्श कर नहीं सकती है।

गुप्त पुरूषार्थ

ईश्वरीय नियमों तथा मर्यादाओं की पालना के लिए वे सदा जगदम्बा के साथ-साथ काली और शीतला स्वरूप बनकर रही तथा सर्व की मनोकामना पूर्ण करने वाली कामधेनु बन उन्होंने महादानी-वरदानी रूप द्वारा ज्ञानामृत का पान कराकर आत्माओं को विषय वासनाओं से मुक्त कराया। पिता परमात्मा की आज्ञाओं का पालन करते हुए एक ही निराकर शिव बाबा से सर्व संबधों की रसना ली। निरन्तर योग लगाकर सर्व खज़ानों की अखुट प्राप्तियों से सम्पन्न होती गई तथा अपने पार्ट को और शिव बाबा के कार्य को पहचान कर, सदा प्रसन्नता एवं सन्तुष्टता के गुणों की धारणा से पुरानी दुनिया के आर्कषण से हटकर वे बाप समान बनती चली गई।